भाकृअनुप-सीफा ने राष्ट्रीय मत्स्य किसान दिवस **2022** मनाया

भाकृअनुप—केंद्रीय मीठाजल जीवपालन अनुसंधान संस्थान ने 11 जुलाई 2022 को अपने कौशलगंगा परिसर में 22 वां राष्ट्रीय मत्स्य कृषक दिवस मनाया। यह दिन वैज्ञानिकों डॉ के एच अलीकुन्ही और डॉ एच एल चौधरी की याद में मनाया जाता है, जिन्होंने 10 जुलाई, 1957 को कार्प प्रजातियों में से एक को सफलतापूर्वक प्रेरित किया था। । इस युगांतरकारी खोज को मनाने के लिए पूरे देश में राष्ट्रीय मत्स्य कृषक दिवस मनाया जाता है। इसने अंततः भारतीय जलीय कृषि उद्योग में क्रांति ला दी थी।

प्रो. सस्मिता रानी सामंत कुलपति, केआईआईटी (डीम्ड यूनिवर्सिटी) इस अवसर पर मुख्य अतिथि थीं। प्रो. सामंत ने अपने भाषण में राष्ट्र की सेवा के लिए संस्थान की सराहना की और वैज्ञानिकों से देश के छोटे पैमाने के जल कृषकों के लिए नवाचार लाने का आग्रह किया। उन्होंने वैज्ञानिकों पर एक ही समय में उत्पादकता बढ़ाने और पर्यावरण के संरक्षण के लिए व्यवहार्य जैविक मछली पालन मॉडल और कुशल जलकृषि विधियों को विकसित करने पर जोर दिया। उन्होंने किसानों को अधिक मछली पैदा करने और आत्मनिर्भरता हासिल करने के लिए उन्नत वैज्ञानिक तरीकों को अपनाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने किसानों से मछली पालन में किसी भी एंटीबायोटिक पदार्थ का उपयोग नहीं करने की सलाह भी प्रदान की।

इस अवसर पर डॉ दिलीप कुमार, पूर्व मात्स्यिकी और जलकृषि क्षेत्र योजना और नीति सलाहकार, एफएओ और पूर्व कुलपति, भाकृअनुप—-सीआईएफई, मुंबई सम्मानित अतिथि थे। उन्होंने रेखांकित किया कि इस महत्वपूर्ण दिन पर प्रौद्योगिकियों के विकास के लिए सभी वैज्ञानिकों, किसानों और हितधारकों को प्रमुख श्रेय दिया जाना चाहिए। उन्होंने किसानों के लिए मत्स्य सेतु ऐप तैयार करने में भाकृअनुप-सीफा के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने गहनता, आहार, विविधीकरण, बीमारियों, जलवायु परिवर्तन आदि के बारे में भी जोर दिया। उन्होंने वैज्ञानिकों को बदलते परिदृश्य से निपटने के लिए किसानों के लिए समाधान के साथ आने के लिए अनुसंधान रणनीतियों को फिर से तैयार करने के लिए प्रेरित किया।

उन्होंने सभी के लिए गुणवत्तापूर्ण मछली के संदेश पर जोर दिया। डॉ के जनार्दन राव, पूर्व प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप-सीफा, भुवनेश्वर भी इस अवसर पर सम्मानित अतिथि थे। उन्होंने प्रजातियों के आधार पर समूहों के गठन पर जोर दिया। उन्होंने प्रशिक्षण के माध्यम से मछली किसानों के कौशल विकास पर भी ध्यान केंद्रित किया और प्रसार सेवाओं को मजबूत करने का आह्वान किया।

सभा को संबोधित करते हुए, भाकृअनुप-सीफा के निदेशक डॉ सरोज के स्वाईं ने कहा कि प्रेरित प्रजनन का आविष्कार भारत और विदेशों में मत्स्य पालन के इतिहास में एक ऐतिहासिक उपलब्धि है। पिछले साढ़े तीन दशकों के समर्पित शोध के दौरान, संस्थान ने आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण मछली और सीपी के प्रजनन और पालन के विकास के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया है इनमे से एफआरपी पोर्टेबल हैचरी जैसे जलकृषि में प्लास्टिक का उपयोग, मछली के विभिन्न जीवन चरणों के लिए फ़ीड, रोग निदान किट, उन्नत रोहू जयंती, सीफाब्रूड टीम, हाइब्रिडाइजेशन डिटेक्शन किट और किसानों के लिए अन्य उपयोगी प्रौद्योगिकियां है। मत्स्य सेतु ऐप को **32000** का उपयोगकर्ता आधार मिला है और यह बढ़ रहा है। भाकृअनुप-सीफा भारत सरकार के तहत एससीएसपी, एसटीसी और एनईएच जैसी प्रमुख योजनाओं के माध्यम से देश भर में अपने हितधारकों को समर्पित है।

दूसरे सत्र में आज़ादी का अमृत महोत्सव - राष्ट्रीय अभियान के एक भाग के रूप में, "उभरती जलीय कृषि प्रणालियों और पद्धतियों" विषय पर एक विचार विरमर्श आयोजित की गई थी। ओडिशा और देश के अन्य हिस्सों के 200 से अधिक किसान विशेष रूप से कृषि महिलाएं, प्रगतिशील किसान, उद्यमी और सरकारी अधिकारियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया और संस्थान के जलकृषि विशेषज्ञों ने किसानों की विभिन्न समस्याओं पर विस्तृत चर्चा की। भारत के विभिन्न हिस्सों के पंद्रह मछली किसानों/उद्यमियों को देश भर में भाकृअनुप-सीफा प्रौद्योगिकियों को अपनाने और बढ़ावा देने में उनके योगदान के लिए सम्मानित किया गया। पुरस्कार विजेताओं ने मछली पालन में अपने अनुभव को दर्शकों के साथ साझा किया। इस अवसर पर छह प्रकाशन और कार्प फीड पर एक वीडियो फिल्म का भी विमोचन किया गया।

(स्रोत: भाकृअनुप-सीफा, भुवनेश्वर)